भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)
केन्द्रीय कमेटी

मई दिवस पर केन्द्रीय कमेटी, भाकपा(माओवादी) का वक्तव्य

विश्व साम्राज्यवादी व्यवस्था को ध्वस्त करने और विश्व समाजवादी व्यवस्था की निर्माण की ओर आगे बढ़ने के लिए एकताबद्ध व संगठित होकर संघर्ष करें!

15 अप्रैल 2018

दुनिया की सर्वहारा वर्ग इस साल कार्ल मार्क्स की जन्म की 200वीं वर्षगांठ मनाने जा रही है। 200 साल पहले पूंजीवाद की प्रगतिशील दौर में जन्में मार्क्स ने उस समय के सामाजिक परिस्थितियों और वर्ग संघर्ष का गहरा अध्ययन किया, जर्मन दर्शनशास्त्र, अंग्रेजी राजनीतिक अर्थशास्त्र व फ्रांसीसी समाजवाद के सभी सकारात्मक पहलूओं को समेटा और दुनिया की न केवल व्याख्या करने बल्कि उसे बदलने को सर्वहारा के लिए सबसे उन्नत हथियार तैयार की। इसी का नतीजा था वैज्ञानिक समाजवाद, जिसने पहली बार वैज्ञानिक आधार पर समाजवाद की क्रांतिकारी सिद्धांत को मजदूर वर्ग के व्यवहारिक आंदोलन से जोड़ा। पूंजीवादी उत्पादन व्यवस्था के विकास के बारे में उनकी जीवनभर की शोध के क्रम में मार्क्स ने सामाजिक विकास के बुनियादी नियमों को ढूंढ निकाला, मानव जाति के सामने मौजूद बुनियादी सवालों का जवाब पेश किया और वर्गों और वर्ग-गुलामी से मुक्त एक नयी समाज की निर्माण में सर्वहारा वर्ग की विश्व-ऐतिहासिक भूमिका को पूरा करने के लिए उसे सैद्धांतिक रूप से लैस किया। मार्क्सवाद का उद्‌भव दुनिया को हिला देनेवाली एक घटना थी, मानव ज्ञान की विकास में एक सम्पूर्ण क्रांति थी और मानव इतिहास में एक नयी युग की शुरूआत थी।

मार्क्सवाद ने दिखाया की पूंजीपति और सर्वहारा वर्गों के हित एक दूसरे के बिल्कुल विपरीत है। वर्ग संघर्ष में पूंजीपति वर्ग और उसके मित्रों तथा सर्वहारा वर्ग और उसके मित्रों के बीच इसने एक स्पष्ट विभाजन रेखा खींच दी। इसने दिखाया की पूंजीवाद का अंत और उसके जगह साम्यवाद का उदय अवश्यंभावी है। जबकि पूंजीवाद ने अपने पहली चरण में उत्पादन शक्तियों का विकास किया और साधारण रूप से एक प्रगतिशील भूमिका निभायी, वर्तमान के उसके साम्राज्यवादी चरण में वह पूरी तरह से प्रतिक्रियावादी बन गया और शोषण, उत्पीड़न, युद्ध और उत्पादन शक्तियों के विध्वंस को एक अभूतपूर्व स्तर तक ले गया। अपने मुनाफे के होड़ में साम्राज्यवाद ने पूंजीवाद की पहली चरण में कभी न देखे जाने वाले स्तर पर दुनिया के बहुसंख्यक देशों, राष्ट्रों और जनता को गुलाम बनाया, करोड़ों मेहनतकश जनता को बदहाली और पीड़ा का शिकार बनाया और प्रकृति की व्यापक विनाश की। दूसरी तरफ, जबकि पूंजीवाद की पहली चरण में बुर्जुआ वर्ग के खिलाफ अपने संघर्ष में सर्वहारा वर्ग तुलनात्मक रूप से कमजोर, असंगठित और अनुभवहीन था, साम्राज्यवाद के युग में वह पहली बार शासक वर्ग बनने लायक मजबूत, संगठित और अनुभवी बन गया। उसने पुराने राज्ययंत्र को ध्वस्त किया और सर्वहारा की तानाशाही - एक ऐसा नया राज्य जिसका मानव इतिहास में कोई मिसाल नहीं - स्थापित किया। लेनिन के नेतृत्व में अक्टूबर क्रांति के जरिए रूस में पहली बार मार्क्सवाद की जीत का परचम लहराया।

बीसवी सदी की सफल सर्वहारा क्रांतियों ने दिखाया कि सर्वहारा वर्ग द्वारा अपना लिए जाने पर मार्क्सवाद एक भौतिक शक्ति में तब्दील हो जाती है। तब वह न केवल बुर्जुआ और अन्य सभी शोषक वर्गों के शासन का खात्मा कर सकता है बल्कि सभी शोषित वर्गों के शासन को भी सृजनात्मक रूप से निर्माण कर सकता है। उन्होंने दिखाया कि अपने राजसत्ता स्थापित कर सर्वहारा वर्ग शासक-शोषक वर्गों के प्रतिक्रियावादी व सड़ी-गली अर्थनीति, राजनीति, संस्कृति, विचारधारा, परम्पराओं और नैतिकताओं को खत्म कर एक लम्बी प्रक्रिया के तहत पूरी तरह से नयी और प्रगतिशील एक अर्थनीति, राजनीति, संस्कृति, विचारधारा, परम्परा और नैतिकता तैयार कर सकता है। पूंजीवादी गुलामी से मुक्त होकर इस नयी समाज में मेहनतकश जनता पहली बार असली आजादी, समानता, मित्रता और जनवाद हासिल कर सकती है जो प्रतिक्रियावादी वर्गों के तानाशाही के दौरान केवल कुछ खोखले शब्दों के अलावा कुछ नहीं होते हैं।

मार्क्सवाद या आज के मार्क्सवाद-लेनिनवाद-माओवाद (मालेमा) की सबसे उन्नत विचारधारा और पिछले डेढ़ सौ

सालों के क्रांतिकारी अनुभव से लैस होने के बावजूद दुनिया की सर्वहारा आज अपने आप को कमजोर और असंगठित पाते हैं जबकि बुर्जुआ वर्ग आज भी सांगठनिक और भौतिक रूप से ताकतवर है। मुख्य रूप से हर तरह के संशोधनवादियों और नये-संशोधनवादियों के विश्वासघात के वजह से एक समय के मजबूत समाजवादी शिविर के विघटन के बाद दुश्मन आज सभी जगह सत्ता पर काबिज है। क्रांतिकारी मजदूर वर्ग के शिविर की कमजोर सांगठनिक स्थिति का फायदा उठाकर वह जनता को क्रूर रूप से दमन कर रहा है। उन सभी देशों में भी जहां सच्चे कम्युनिस्ट पार्टियों के नेतृत्व में क्रांतिकारी संघर्ष चल रहे हैं, साम्राज्यवादी और घरेलू प्रतिक्रियावादी शासक वर्ग चेतनाबद्ध रूप से पुराने समाज की प्रतिक्रियावादी राजनीति और संस्कृति को बढ़ावा दे रहे हैं। जनता के बीच फूट डालने और उनपर प्रभुत्व जारी रखने के लिए वह सामाजिक बुराइयों को बनाये रखे हुए हैं। इसके बावजूद उत्पीड़ित जनता सही जनवाद, आजादी, सम्प्रभूता और समानता की आकांक्षा रखती है; वह हर तरह के शोषण, उत्पीड़न, भेदभाव और अपमान से मुक्ति चाहती हैं; वह इसके लिए लड़ती भी है। लेकिन वर्ग समाज के बनने, पूंजीवाद का साम्राज्यवाद में तब्दील होने और खासतौर पर पिछली सदी में समाजवाद की तात्कालिक हार के बाद सर्वहारा क्रांति के अलावा इन्हें हासिल करने का और कोई दूसरा तरीका नहीं है। समाजवादी शिविर के विघटन के बाद आज इस तरह की क्रांतियों को सफल करना काफी ज्यादा चुनौतीपूर्ण हो गया है। इस मायने में आज का समय अक्टूबर क्रांति के पहले के समय जैसा ही हो गया है। फिर भी, शोषितों के आर्थिक गुलामी के अलावा उनके वैचारिक व सांस्कृतिक गुलामी के - जिसके चलते वे एक बेहतर भविष्य के सपने को भी खो देते हैं - अंत के लिए भी सर्वहारा क्रांति का कोई दूसरा विकल्प नहीं है।

पिछले चार दशकों के साम्राज्यवादी नव-उदारवाद के दौर में, पूंजीवादी विश्व अर्थनीति के अभूतपूर्व विस्तार के साथ-साथ साम्राज्यवाद और उत्पीड़ित राष्ट्रों व जनता के बीच, पूंजीपति और सर्वहारा वर्गों के बीच तथा साम्राज्यवादी शक्तियों के बीच के अंतरविरोध भी अभूतपूर्व स्तर पर तीखी हो गयी हैं। इसी के अनुपात में उत्पीड़ित राष्ट्रों और जनता के खिलाफ साम्राज्यवाद के हमले और पूंजी का श्रम के खिलाफ हमले पूरी दुनिया में बढ़ गये हैं। नतीजे में मजदूर, किसान, मध्यम वर्ग, महिलाएं, धार्मिक अल्पसंख्यक, उत्पीड़ित राष्ट्रीयताएं, पीड़ित नस्लें व समूहें और भी ज्यादा गंभीर आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक शोषण-उत्पीड़न का सामना कर रहे हैं। अमीरों और गरीबों के बीच की खाई अभूतपूर्व स्तर तक बढ़ गयी है। साम्राज्यवादी 'भूमंडलीकरण' का परजीवी, आक्रामक और विनाशकारी चरित्र मेहतनकश जनता के लिए और भी ज्यादा असहनीय हो गया है और वे इससे मुक्ति की राह तलाश रही है। इसलिए, विश्व पूंजीवादी अर्थव्यवस्था का वर्तमान संकट न केवल मेहनतकश जनता के लिए बेहद दुख और पीड़ा पैदा कर रहा है बल्कि क्रांति के लिए भी नयी संभावनाएं पैदा कर रहा है। हमारे देश और दुनिया के सर्वहारा वर्ग को यह गंभीरता से सोचना होगा की वह कैसे इस अनुकूल परिस्थिति को अपने मुक्ति संघर्ष में उपयोग करेंगे।

हमारे देश में मजदूर वर्ग और अन्य सभी उत्पीड़ित वर्ग व सामाजिक तबके ब्राह्मणवादी हिंदू फासीवाद के रूप में शासक वर्गों के अभूतपूर्व हमले का सामना कर रहे हैं। आरएसएस-भाजपा के नेतृत्व में और दमनकारी राज्य व्यवस्था की मदद से देशभर में विभिन्न तरीकों के शोषण और उत्पीड़न तेज हो रहे हैं। वे साम्राज्यवादियों और घरेलू शासक वर्गों के लूट को बढ़ावा दे रहे हैं। भारत को एक 'हिंदू राष्ट्र' और बड़ी शक्ति के रूप में बदलने के उनके पुराने लक्ष्य के तहत मोदी नेतृत्वाधीन केन्द्रीय सरकार और राज्य सरकारें मजदूरों, किसानों, कर्मचारियों, छोटे और मध्यम व्यापारियों, बेरोजगारों, छात्र-नौजवानों, दलितों, आदिवासियों, महिलाओं, धार्मिक अल्पसंख्यकों, उत्पीड़ित राष्ट्रीयताओं, पर्यावरणवादियों आदि के जनवादी आंदोलनों को कुचल रहे हैं। देश के सभी शोषित वर्गों और तबकों के लिए आशा की किरण बने माओवादी आंदोलन को भी इसी क्रम में बर्बर प्रतिक्रांतिकारी हमलों का निशाना बनाया जा रहा है। सार में ये वर्ग उत्पीड़न और वर्ग युद्ध का ही प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप हैं।

पिछले विश्वयुद्ध के बाद से ही साम्राज्यवादियों ने मेहनतकश जनता के खिलाफ वर्ग युद्ध और क्रांतिकारी, राष्ट्रीय मुक्ति व जनवादी आंदोलनों के खिलाफ प्रतिक्रांतिकारी युद्धों को निरंतर जारी रखे हुए हैं। पिछले आधे सदी में सभी महाद्वीपों में चलाए गए खुले और गुप्त अन्यायपूर्ण युद्धों, सत्तापलट, हस्तक्षेप आदि इसका भरपूर सबूत पेश करते हैं, जिसका अफगानिस्तान, इराक, लीबिया, सीरिया और यमन केवल कुछ हाल ही के उदाहरण हैं। अपने व्यापार युद्धों, कूटनीतिक संघर्षों, प्रतिबंधों, सैनिक उकसावों, हस्तक्षेपों और हमलों के जरिए आज साम्राज्यवादी शक्तियां फिर एक बार दुनिया की जनता को एक नयी साम्राज्यवादी युद्ध की तरफ ढकेल रही है। 1930 के दशक के महामंदी के बाद वर्तमान में जारी सबसे गंभीर आर्थिक संकट से अपने आपको बाहर लाने के लिए साम्राज्यवादी आज एक दूसरे के खिलाफ युद्ध की तैयारी कर रहे हैं। सभी देशों के सर्वहारा वर्ग अब फिर से नयी साम्राज्यवादी युद्धों के खिलाफ जनता को संगठित कर मजबूती से विरोध करने, और युद्ध छिड़ जाने की स्थिति में अपने-अपने देशों में राजनीतिक सत्ता हासिल करने के लक्ष्य से इसे क्रांतिकारी गृहयुद्धों में तब्दील करने की महान कर्तव्य का सामना कर रहा है। सभी देशों के

सर्वहारा वर्ग और उसकी सच्ची हिरावल पार्टियां पहलकदमी के साथ व्यापक जनता को जूझारू रूप से संगठित करते हुए ही निष्क्रियता से बाहर आ सकते हैं, केवल मूक दर्शक की भूमिका से उबर सकते हैं और राजनीतिक क्षेत्र में हस्तक्षेप कर साम्राज्यवादी संकटों और युद्धों को क्रांति के हित में उपयोग कर सकते हैं।

इस कार्यभार की विशालता मांग करती है कि हर देश का सर्वहारा वर्ग दुनिया के और अपने-अपने देशों के वर्तमान ठोस परिस्थितियों का मार्क्सवाद (मालेमा) की रोशनी में वैज्ञानिक विश्लेषण करें, जहां हिरावल कम्युनिस्ट पार्टियां मौजूद नहीं हैं वहां उनका निर्माण करें, जहां वे कमजोर हैं वहां उन्हें मजबूत करें, राज्यसत्ता हासिल करने की दृष्टिकोण से दुश्मन के खिलाफ क्रांतिकारी वर्ग संघर्ष छेड़ने के लिए संघर्ष और संगठन के सही रूपों का चयन करें। अंतर्राष्ट्रीय सर्वहारा वर्ग के सच्चे हिरावल पार्टियों और संगठनों के सामने आज दो रणनीतिक कार्यभार हैं। इसमें से पहला है, हर एक देश के ठोस आर्थिक और सामाजिक परिस्थिति, समाज का चरित्र, इसके वर्गों और वर्ग-संबंधों तथा मुख्य व प्रधान अंतरविरोधों का सही विश्लेषण कर उस देश की सर्वहारा क्रांति की साधारण राजनीतिक दिशा निर्धारित करना। केवल इसी तरह सर्वहारा की पार्टी अपने मित्रों और शत्रुओं का सही पहचान कर सकती है, वर्ग संघर्ष की सटीक रणनीति और कार्यनीति निर्धारित कर सकती है तथा वर्ग दुश्मन के खिलाफ सभी मित्रशक्तियों का नेतृत्व कर सकती है। इसी तरह वह पूंजीवादी-साम्राज्यवादी देशों में मजदूर वर्ग व अन्य उत्पीड़ित तबकों के क्रांतिकारी आंदोलन खड़ा कर सकती है और अर्ध-औपनिवेशिक अर्ध-सामंती देशों में मजदूर, किसान व अन्य जनवादी वर्गों व सामाजिक तबकों को संगठित कर राष्ट्रीय-जनवादी आंदोलन शुरू कर सकती है जहां ऐसे आंदोलन पहले से मौजूद न हों। दूसरा रणनीतिक कार्यभार है, साम्राज्यवाद और उसके दलालों के खिलाफ पूंजीवादी देशों के कम्युनिस्ट आंदोलनों और नये-औपनिवेशिक व अर्ध-औपनिवेशिक देशों के राष्ट्रीय-जनवादी आंदोलनों का एक मजबूत संयुक्त मोर्चा गठन करना। सच्ची सर्वहारा पार्टियों और संगठनों को इसके लिए वर्तमान के ठोस परिस्थितियों के अनुरूप एक उपयुक्त अंतर्राष्ट्रीय क्रांतिकारी सर्वहारा संगठन स्थापित करना होगा। इसके अलावा दुश्मन के खिलाफ हर देश में माओवादी शक्तियों को सभी प्रगतिशील और जनवादी ताकतों के साथ तथा दुनिया के पैमाने पर सभी साम्राज्यवाद-विरोधी, जनवादी शक्तियों के साथ एकजुट होना होगा। ये दोनों राजनीतिक कार्यभार एक दूसरे के पूरक होंगे और विश्व समाजवादी क्रांति को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायेंगे।

समय की यह मांग है कि हमारे देश का सर्वहारा वर्ग क्रांतिकारी मार्क्सवाद के बेनर तले पहले से भी ज्यादा संगठित हो जाए तथा वर्तमान ब्राह्मणवादी हिंदू फासीवादी ताकतों के नेतृत्व में शासक वर्गों के हमलों के खिलाफ सभी उत्पीड़ित वर्गों, तबकों और व्यक्तियों को आंदोलन में एकजुट करें। देश के राष्ट्रीय-जनवादी आंदोलन के विशाल धारा के भाग के रूप में ऐसी एक एकीकृत आंदोलन के निर्माण के लिए अब सही समय है। परजीवि शासक वर्गों के मुठ्टीभर लोगों को छोड़कर सभी को ऐसी एक आंदोलन की सख्त जरूरत है। लेकिन केवल मांगें उठाकर, आलोचना के जरिए या निष्क्रिय व असंगठित प्रतिरोध से ही यह आंदोलन सफल नहीं हो सकती। शोषित और उत्पीड़ित जनता के स्वेच्छापूर्वक एकता पर आधारित होकर दुश्मन के खिलाफ अंत तक लड़ने को संगठित होकर ही यह आंदोलन सफल हो सकती है, सही मायने में एक जनवादी, समतामूलक, आजाद, सम्प्रभूतासम्पन्न, आत्मनिर्भर, पर्यावरण के प्रति संवेदनशील नयी समाज की नींव रख सकती है और जनता के सभी समस्याओं का क्रांतिकारी हल निकाल सकती है। भारत के सर्वहारा वर्ग के अगुवा के रूप में हमारी पार्टी इस कार्यभार को निष्ठा से पूरा करने में अपनी भूमिका निभाने को प्रतिबद्ध है।

मेहनतकश जनता को भटकाने के लिए संशोधनवादी और नये-संशोधनवादी सहित साम्राज्यवादियों और अन्य प्रतिक्रियावादी वर्गों के वफादार चमचें चाहे जो भी कहें, पूंजीवाद को बार-बार गहरे से गहरे संकटों व विनाशकारी युद्धों में ढकेल देनेवाले उसके अंदरूनी अंतरविरोधों का समाधान करना उसके लिए असंभव है। मार्क्सवादी सिद्धांत तथा मार्क्स-एंगेल्स के समय से जारी विश्वव्यापी कम्युनिस्ट आंदोलन ने यह बिल्कुल साफ कर दिया है कि वर्ग समाज के विकास के क्रम में पूंजीवाद केवल एक चरण मात्र है जिसे साम्यवाद के नये, ज्यादा उन्नत, प्रगतिशील, तर्कसंगत और न्यायपूर्ण सामाजिक व्यवस्था द्वारा बदल देना बिल्कुल तय है। आधुनिक साम्राज्यवाद, जो पूंजीवाद का सबसे ऊंचा चरण है, सर्वहारा क्रांतियों की पूर्वसंध्या है। मार्क्सवाद की इस बुनियादी पाठ को समझते हुए विश्व सर्वहारा वर्ग को अपने ऐतिहासिक जिम्मेदारी का पहचान कर उसे निभाने के लिए आगे आना होगा, मालेमा की रोशनी में सभी शोषित वर्गों और सामाजिक तबकों को एकताबद्ध करना होगा और मुक्ति संघर्ष में उनका नेतृत्व करना होगा।

यह सच है कि हमारे देश के और दुनिया के मजदूर उनके आर्थिक मांगों के लिए अलग-अलग रूपों में लड़ रहे हैं। इस तरह के संघर्ष पूंजीवाद के जन्म के समय से ही चल रहे हैं। लेकिन मार्क्सवाद हमें सिखाता है कि अगर मजदूर वर्ग अपने संघर्षों को केवल आंशिक मांगों तक ही सीमित रखता है और उन्हें श्रम की गुलामी के खात्मे के संघर्ष से नहीं जोड़ता है तो उनके आर्थिक व सामाजिक गुलामी का कोई अंत नहीं होगा। इसलिए उन्हें अपने आंशिक संघर्षों

को अर्थवाद, सुधारवाद व संशोधनवाद के खिलाफ संघर्ष के साथ जोड़ना होगा, उन्हें राज्यसत्ता और मजदूर वर्ग की तानाशाही के लिए संघर्ष के साथ जोड़ना होगा।

कार्ल मार्क्स के जन्म की 200वीं वर्षगांठ के संदर्भ में मनाए जानेवाली इस मई दिवस के अवसर पर पिछले सालों के अतंर्राष्ट्रीय मई दिवस के आह्वानों की भावना के अनुरूप हमारी केन्द्रीय कमेटी देश व दुनिया के मजदूरों से अपील करती है कि वे मार्क्सवाद (आज के मालेमा) को सभी शोषितों के मुक्ति का एकमात्र विचारधारा के रूप में ऊंचा उठायें। हम उनसे आह्वान करते हैं कि क्रांतिकारी वर्ग-संघर्ष में मार्क्सवाद को लागू करने में महारत हासिल करने के लिए वे मार्क्सवाद की गहरी अध्ययन करें, इसे गहराई से समझे और इस पर मजबूत पकड़ हासिल करें। इसकी रोशनी में विश्व साम्राज्यवादी व्यवस्था तथा उसके हर एक भाग - एक-एक पूंजीवादी देश और नये-औपनिवेशिक व अर्ध-औपनिवेशिक देश - के ठोस परिस्थितियों का सही विश्लेषण करें। पेरिस कम्युन, बोल्शेविक क्रांति, चीनी क्रांति व महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रांति, हमारे देश सहित सभी देशों के क्रांतिकारी और राष्ट्रीय मुक्ति युद्धों तथा दुनिया के मजदूर संघर्षों के सकारात्मक और नकारात्मक सबकों से सीखें। इन सबकों को हमारे ठोस परिस्थितियों में सही और सृजनात्मक तरीके से लागू करें। अंतर्राष्ट्रीय मजदूर दिवस यही ऐतिहासिक कार्यभार हमारे सामने रख रही है। आइए, मार्क्स और पिछले सदी के सर्वहारा क्रांतियों के दिखाये राह पर चल कर दुनिया के सभी शोषितों-उत्पीड़ितों का पक्ष लेकर इस आखिरी वर्ग युद्ध में शामिल हों और संघर्ष की राह पर आगे बढ़ें। आइए, भारत की माओवादी आंदोलन का 2022 तक सफाया करने के लक्ष्य से तैयार नयी प्रतिक्रांतिकारी योजना 'समाधान' को हराने के लिए गुरिल्ला युद्ध को तेज करें, जनता को बड़े पैमाने पर गोलबंद करें, जनाधार का विस्तार करें और हमारे आत्मगत शक्तियों को मजबूत करें। आइए, अंतर्राष्ट्रीय सर्वहारा वर्ग के एक टुकड़ी के रूप में 'इंटरनेशनल' की उस महान आह्वान को साकार करने का फिर से शपथ लें:

उठो जागो-जागो भूखी बंदी
अब खींचो लाल तलवार,
कब तक सहोगे भाई
जालिम का अत्याचार,
तेरे रक्त से रंजित क्रंदन
अब दस दिशा लाया रंग,
सौ-सौ बरस के बंधन
एक साथ करेंगे भंग,
यह अंतिम जंग है कॉमरेड
जीतेंगे हम एक साथ,
गावो इंटरनेशनल भाव
स्वतंत्रता के गान...

अभय

(अभय)
प्रवक्ता
केन्द्रीय कमेटी
भाकपा(माओवादी)